॥छन्द॥

छन्द परिचय-

छन्द शब्द मूल रूप से छन्दस् अथवा छन्दः है । इसके शाब्दिक अर्थ दो है – 'आच्छादित कर देने वाला और 'आनन्द देने वाला । लय और ताल से युक्त ध्वनि मनुष्य के हृदय पर प्रभाव डाल कर उसे एक विषय में स्थिर कर देती है और मनुष्य उससे प्राप्त आनन्द में डूब जाता है। यही कारण है कि लय और ताल वाली रचना छन्द कहलाती है इसका दूसरा नाम वृत्त है । वृत्त का अर्थ है प्रभावशाली रचना । वृत्त भी छन्द को इसलिए कहते हैं, क्योंकि अर्थ जाने बिना भी सुनने वाला इसकी स्वर-लहरी से प्रभावित हो जाता है । यही कारण है कि सभी वेद छन्द-रचना में ही संसार में प्रकट हुए थे ।

सम और विषमपाद-

पहला और तीसरा चरण विषमपाद कहलाते हैं और दूसरा तथा चौथा चरण समपाद कहलाता है । सम छन्दों में सभी चरणों की मात्राएँ या वर्ण बराबर और एक क्रम में होती हैं और विषम छन्दों में विषम चरणों की मात्राओं या वर्णों की संख्या और क्रम भिन्न तथा सम चरणों की भिन्न होती हैं ।

यति-

हम किसी पद्य को गाते हुए जिस स्थान पर रुकते हैं, उसे यति या विराम कहते हैं । प्रायः प्रत्येक छन्द के पाद के अन्त में तो यति होती ही है, बीच बीच में भी उसका स्थान निश्चित होता है । प्रत्येक छन्द की यति भिन्न भिन्न मात्राओं या वर्णों के बाद प्रायः होती है

छन्दों के भेद-

छन्द मुख्यतः दो प्रकार के हैं:

1. मात्रिक 2. **वार्णिक**

1. मात्रिक छन्द-

मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गिनती की जाती है । संस्कृत में अधिकतर वर्णिक छन्दों का ही ज्ञान कराया जाता है।

2. वार्णिक छन्द-

वार्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या निश्चित होती है और इनमें लघु और दीर्घ का क्रम भी निश्चित होता है, जब कि मात्रिक छन्दों में इस क्रम का होना अनिवार्य नहीं है । मात्रा ह्रस्व स्वर जैसे 'अ' की एक मात्रा और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ मानी जाती है । यदि ह्रस्व स्वर के वाद संयुक्त वर्ण, अनुस्वार अथवा विसर्ग हो तव ह्रस्व स्वर की दो मात्राएँ मानी जाती है । पाद का अन्तिम ह्रस्व स्वर आवश्यकता पडने पर गुरु मान लिया जाता है । ह्रस्व मात्रा का चिह्न '।' यह है और दीर्घ का 'ऽ' है । **जैसे 'सत्याग्रह'** शब्द में कितनी मात्राएँ हैं, इसे हम इस प्रकार समझेंगे: **सत्याग्रह** = 6 इस प्रकार हमें पता चल गया कि इस शब्द में छह मात्राएँ हैं । स्वरहीन व्यंजनों की पृथक् मात्रा नहीं गिनी जाती। वर्ण या अक्षर: ह्रस्व मात्रा वाला वर्ण लघु और दीर्घ मात्रा वाला वर्ण गुरु कहलाता है । यहाँ भी 'सत्याग्रह' वाला नियम समझ लेना चाहिए । चरण अथवा पाद: 'पाद' का अर्थ है चतुर्थांश, और 'चरण' उसका पर्यायवाची शब्द है । प्रत्येक छन्द के प्रायः चार चरण या पाद होते हैं।

वर्णिक छन्द-

वर्णिक छन्दों में वर्ण गणों के हिसाब से रखे जाते हैं । तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं । इन गणों के नाम हैं: यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण । अकेले लघु को 'ल और गुरु को 'ग' कहते हैं । किस गण में लघु-गुरु का क्या क्रम है, यह जानने के लिए सूत्र है-

सूत्र- "यमाताराजभानसलगा:"।

यगण - यमाता = ।ऽऽ आदि लघु

मगण - मातारा = ऽऽऽ सर्वगुरु

तगण - ताराज = ऽऽ। अन्तलघु

रगण - राजभा = ऽ।ऽ मध्यलघु

जगण - जभान = ।ऽ। मध्यगुरु

भगण - भानस = ऽ।। आदिगुरु

नगण - नसल = ।।। सर्वलघु

सगण - सलगाः = ।।ऽ अन्तगुरु

मात्राओं में जो अकेली मात्रा है, उस के आधार पर इन्हें आदिलघु या आदिगुरु कहा गया है । जिसमें सब गुरु है, वह 'मगण' सर्वगुरु कहलाया और सभी लघु होने से 'नगण' सर्वलघु कहलाया ।

"मस्त्रिगुरुः त्रिलघुश्च नकारो,भादिगुरुः पुनरादिर्लघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः,सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुतः" ॥

महत्वपूर्ण वर्णिक छन्दों का परिचय-

(1) आर्या-

'यस्या प्रथमे पादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या॥

आर्या छन्द संस्कृत पद्य का एक 'मात्रिक' छन्द है। जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में बारह बारह मात्रायें, द्वितीय चरण में अठारह मात्रायें और चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्रायें हों, वह आर्या छन्द कहलाता है।

उदाहरण-

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति॥

प्रस्तुत उदाहरण में प्रथम और तृतीय चरण में 12 बारह मात्रायें, द्वितीय चरण में 18 अठारह मात्रायें और चतुर्थ चरण में 15 मात्रायें होने से आर्या छन्द है।

(2) अनुष्टुप-

इस छन्द को श्लोक भी कहते हैं । इसके अनेक भेद हैं, परंतु जिस का अधिकतर व्यवहार हो रहा है, उसका लक्षण इस प्रकार से है-

लक्षण-

"श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुः पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः" ॥

यह छन्द 'अर्धसमवृत्त' है । इस के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं । पहले चार वर्ण किसी भी मात्रा के हो सकते हैं । छठा वर्ण गुरु और

पाँचवाँ लघु होता है। सम चरणों में सातवाँ वर्ण ह्रस्व और विषम चरणों में गुरु होता है,

उदाहरण-

ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ

लोकानुग्रहकर्तारः, प्रवर्धन्ते नरेश्वराः ।

लोकानां संक्षयाच्चैव, क्षयं यान्ति न संशयः ॥ (पंचतंत्र)

गीता, रामायण, महाभारत आदि में इसी छन्द का बाहुल्य है।

(3) इन्द्रवज्रा-

इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं। इस का लक्षण इस प्रकार से है-

लक्षण-

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः" ।

इसका अर्थ है कि इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु के क्रम से वर्ण रखे जाते हैं। इसका स्वरुप इस प्रकार से है-

ऽऽ।	ऽऽ।	।ऽ।	ऽऽ
तगण	**तगण**	**जगण**	**दो गुरु**

उदाहरण-

ऽऽ। ऽऽ ।।ऽ। ऽऽ

विद्येव पुंसो महिमेव राज्ञः

प्रज्ञेव वैद्यस्य दयेव साधोः ।

लज्जेव शूरस्य मुजेव यूनो,

सम्भूषणं तस्य नृपस्य सैव॥

यहाँ प्रत्येक पंक्ति में प्रथम पंक्ति वाले ही वर्णों का क्रम है। अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है।

(4) उपेन्द्रवज्रा-

इस छन्द के भी प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं। लक्षण इस प्रकार से हैं-

लक्षण- "उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ"।

इस का अर्थ यह है कि उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्णों के क्रम से वर्ण होते हैं। इस का स्वरुप इस प्रकार से है-

।ऽ।	ऽऽ।	।ऽ।	ऽऽ
जगण	**तगण**	**जगण**	**दो गुरु**

उदाहरण-

। ऽ। ऽऽ । ।ऽ ।ऽऽ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देव-देव॥

विशेष-अंतिम 'व' लघु होते हुए भी गुरु माना गया है।

(5) वसन्ततिलका-

यह चौदह वर्णों का छन्द है। तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरुओं के क्रम से इसका प्रत्येक चरण बनता है।

लक्षण-

"उक्ता वसन्ततिलका तभजाः जगौ गः" ।

उदाहरण-

ऽ ऽ ।ऽ। ।।ऽ। ।ऽ। ऽऽ

हे हेमकार परदुःख-विचार-मूढ

किं मां मुहुः क्षिपसि वार-शतानि वह्नौ ।

सन्दीप्यते मयि तु सुप्रगुणातिरेको-

लाभः परं तव मुखे खलु भस्मपातः॥

(6) उपजाति-

जिस छन्द में कोई चरण इन्द्रवज्रा का हो और कोई उपेन्द्रवज्रा का, उसे उपजाति छन्द कह्ते हैं।

लक्षण-

"अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम"॥

अर्थात् इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा अथवा अन्य प्रकार के छन्द जब मिलकर एक रुप ग्रहण कर लेते हैं, तो उसे उपजाति कहते हैं।

उदाहरण-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।

पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥ (कुमारसंभवम्)

(7) वंशस्थ-

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं :

लक्षण- **"वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ"।**

उदाहरण-

। ऽ। ऽऽ ।।ऽ । ऽ।ऽ

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते

न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
पराऽस्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञान-बल-क्रिया च॥ (श्वेताश्वतर)

(8) द्रुतविलम्बितम्-

इस छन्द के प्रत्येक चरण में 12-12 वर्ण होते हैं, जिस का लक्षण और स्वरुप निम्नलिखित है-

लक्षण- "द्रुतविलम्बितमाहो नभौ भरौ"।

अर्थात् द्रुतविलम्बित छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं ।

III SI IS IIS IS
विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥ (नीतिशतकम्)

(9) शालिनि-

शालिनी एक संस्कृत छन्द है। इसमें 11 वर्ण होते है । (मा ता ता गा गा) शालिनी छंद मगण (SSS), दो तगण (SSI,SSI) , दो गुरु (SS) के योग से बनता है इस प्रकार इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं। चौथे और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है।

लक्षण- SS SSS ISSISS
"मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः" ।

(10) मालिनी-

मालिनी 15 वर्णों का छन्द है, जिसका लक्षण इस प्रकार से हैः

लक्षण- "न-न-मययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः" ।

इसका अर्थ है कि मालिनी छन्द में प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगणों के क्रम से 15 वर्ण होते हैं और इसमें यति आठवें और सातवें वर्णों के बाद होती है-

उदाहरण-

IIIIIIS SS ISS ISS
वयमिह परितुष्टाः वल्कलैस्त्वं दुकूलैः
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः ।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि तु परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः॥ (वैराग्यशतक)

(11) शिखरिणी-

शिखरिणी छन्द के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं और पहले 6 तथा फिर 11 वर्णों के बाद यति होती है । जिसमें यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु तथा गुरु के क्रम से प्रत्येक चरण में वर्ण रखे जाते हैं और 6 तथा 11 वर्णों के बाद यति होती है, उसे शिखरिणी छन्द कहते हैं; इस का लक्षण इस प्रकार से है-

लक्षण- "रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी"।
IS SSSS IIIIISS IIIS

उदाहरण-

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादधिगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥ (नीतिशतक)

(12) मन्दाक्रान्ता-

मन्दाक्रान्ता छन्द में प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु वर्णों पर यति होती है । यही बात इस लक्षण में कही गई हैः

लक्षण- "मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ ग-युग्मम्" ।

क्योंकि अम्बुधि (सागर) 4 हैं, रस 6 हैं, और नग (पर्वत) 7 हैं, अतः इस क्रम से यति होगी और मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु वर्ण होंगे ।

उदाहरण-

SS SS IIIIIS SI SSIS S
यद्वा तद्वा विषमपतितः साधु वा गर्हितं वा
कालापेक्षी हृदयनिहितं बुद्धिमान् कर्म कुर्यात् ।
किं गाण्डीवस्फुरदुरुघनस्फालनक्रूरपाणिः
नासील्लीलानटनविलखन् मेखली सव्यसाची॥

(13) हरिणि-

लक्षण - नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणीमता।

जिस छन्द में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु तथा गुरू होते हों और चतुर्थ षष्ठ सप्तम् वर्ण में यति होती है, और कुल सत्रह मात्राएं होती हैं उसे हरिणी छन्द कहते हैं ।

उदाहरण- IIIIISSSSS ISIISIS
कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धिजुगुप्सितम्
निरुपमरसप्रीत्या खादन्नरास्थिनिरामिषम् ।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शंकते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् ॥

(14) शार्दूलविक्रीडितम्-

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण निम्नलिखित क्रम से होते हैं। **सूर्य (12)** और **अश्व (7)** पर जिसमें यति होती है और जहाँ वर्ण मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और एक गुरु के क्रम से रखे जाते हैं, वह शार्दूलविक्रीडित छन्द होता है-

लक्षण-

"सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्" ।

SSS । । S ।S । । ।S S S। S S । S

उदाहरण-

रे रे चातक ! सावधान-मनसा मित्र क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वे तु नैतादृशाः ।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥ (नीति.)

इस प्रकार यहाँ 3 मात्रिक और 12 वर्णिक महत्त्वपूर्ण छन्दों का परिचय दिया गया है ।

(15) स्रग्धरा-

1. यह प्रकृति जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते है, जो क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, व तीन यगण के रूप में लिखे जाते हैं।
3. इसमें यति क्रमशः 7, 7, 7 वर्णों पर होती है।

लक्षण- **म्रभ्नैर्यानां त्रयेण-त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्** ।

उदाहरण-

S S S S। SS ।।। । ।।S S ।SS । SS

"या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री।
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः"॥